रजिस्ट्रेशन : निःशुल्क

रजिस्ट्रेशन एवं सारांश को अपलोड करने के लिए प्रतिभागी नीचे दिये गये लिंक पर क्लिक करें :

https://bit.ly/2YoOJil

सहभागिता तथा शोध प्रपत्र जमा करने हेतु दिशानिर्देश:

इच्छुक प्रतिभागी अपने शोध प्रपत्र का सारांश साफ्ट कॉपी (250 से 300 शब्दों में) दिये हुए विचार बिन्दुओं पर कृति देव 010 अथवा Times New Roman (font size 12) दिनांक 25 जून, 2020 तक निम्नलिखित ईमेल पर प्रेषित करें–

miwebinar2020@vkm.org.in

सभी प्रतिभागियों को ई–प्रमाण पत्र प्रदान किया जायेगा।

वेबिनार मे प्रतिभागिता हेतु :

Meeting ID/Link (Through Google Meet)

ID – **qen-nzet-aww**

Link – **https://meet.google.com/qen-nzet-aww**

(Google meet App may be downloaded via play store/apple store or can easily join through this link by laptop/desktop

Facebook Page Link

https://bit.ly/2ymYB1P

Youtube Link

https://bit.ly/3gaJ9GY

संरक्षक

श्रीमती उमा भट्टाचार्या – प्रबन्धक

मार्गदर्शक

प्रो. रचना श्रीवास्तव – प्राचार्या

संयोजिका

डॉ. मीनू पाठक – अध्यक्षा
असोसिएट प्रोफेसर
संगीत वादन (सितार) विभाग

आयोजन सचिव

डा. सुमन सिंह – असोसिएट प्रोफेसर
संगीत वादन (सितार) विभाग

डॉ. अमित ईश्वर – तबला संगतकार
संगीत वादन (सितार) विभाग

परामर्शदात्री समिति

डॉ. शान्ता चटर्जी, असोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा संस्कृत विभाग

डॉ. संगीता देवडिया, असोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, गृहविज्ञान विभाग

आयोजन समिति

1.डॉ. स्वरवन्दना शर्मा, असोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, संगीत गायन विभाग
2.डॉ. आशा यादव, असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
3.डॉ. नीहारिका लाल, असोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
4.डॉ. शुभ्रा सिन्हा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग
5.डॉ. अंशु शुक्ला, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गृहविज्ञान विभाग

तकनीकी सहायक

1. डॉ. अन्नपूर्णा, प्रशासनिक अधिकारी
2. श्री चन्द्रकान्त चटर्जी, तकनीकी सहायक
3. श्री कपिलदेव यादव, कनिष्ठ लिपिक
4. श्री विशाल प्रजापति, कनिष्ठ लिपिक

वसन्त कन्या महाविद्यालय

(एडमिटिड टू द प्रिविलिजिस ऑफ बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी)
कमच्छा, वाराणसी–221010
"नैक" द्वारा 'A' प्रमाणित

EDUCATION
AS SERVICE

दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार

"वैश्विक क्षितिज में लोकप्रिय भारतीय संगीत के विविध आयामों में आज की चुनौतियाँ और समाधान (Challenges and Solutions to the Various Dimensions of Popular Indian Music in the Present Global Scenario)"

26–27 जून, 2020

समय : 11:30 – 3:00

आयोजक

संगीत वादन (सितार) विभाग
वसन्त कन्या महाविद्यालय
कमच्छा, वाराणसी–221010

महाविद्यालयी संदर्भ

वसन्त कन्या महाविद्यालय की स्थापना 1954 में हुई। डॉ0 एनी बेसेण्ट के आदर्शों तथा शिक्षा सिद्धान्तों को समर्पित महान दार्शनिक व शिक्षाविद डॉ0 रोहित मेहता जी द्वारा स्थापित यह महाविद्यालय कमच्छा स्थित थियोसॉफिकल सोसायटी, भारतीय शाखा के सुन्दर परिसर में विद्यमान है। "शिक्षा ही सेवा है" के मूल मंत्र से अनुप्राणित यह संस्था अपनी प्राचीन परम्पराओं के साथ आधुनिक वैज्ञानिक विचारों का सन्निवेश करते हुये स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तित्व–विकास, उत्तम चरित्र निर्माण, अनुशासनप्रियता एवं सांस्कृतिक बोध को जागृत कर रही है। यह महाविद्यालय का0हि0वि0वि0 से सम्बद्ध होकर स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर विभिन्न विषयों में अनवरत रूप से विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक सहित उत्तम परीक्षा परिणाम समुन्नत विविध सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक शिक्षणेतर गतिविधियों से अपनी विशिष्ट पहचान बनाये हुये है। महाविद्यालय वर्तमान में कला संकाय के 9 एवं सामाजिक विज्ञान संकाय के 5 विषयों में स्नातक पाठ्यक्रम के साथ 5 विषयों में स्नातकोत्तर व शोधकार्य की सुविधा के साथ ही वर्तमान में अन्यान्य विषयों में भी स्नातकोत्तर व शोध कार्य होना एवं भूगोल जैसे नये विषय में स्नातकीय मान्यता संकल्पित है। यू0जी0सी0 व का0हि0वि0वि0 द्वारा स्वीकृत कई विषयों में डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का भी सफलतापूर्वक संचालन हो रहा है।

हमारी अतिप्राचीन काशी नगरी उत्तरवाहिनी भागीरथी गंगा जो चलायमान मंदिर सदृश्य है, उसके सुरम्य पश्चिम तट पर ये नगरी अवस्थित है। सुप्रसिद्ध काशी नगरी सम्पूर्ण विश्व में अपनी समृद्ध वैदिक परम्पराओं, सांस्कृतिक विरासतों व महान संगीतज्ञों की साधना की आध्यात्मिक स्थली के रूप में प्रतिष्ठित है। हमारी प्रणेता डॉ0 एनी बेसेण्ट जी ने महिला शिक्षण में विशेष रूप से हिन्दी, संस्कृत, दर्शन, अंग्रेजी एवं संगीत विषय को अति आवश्यक बताया। ये हम सब के लिये गौरव का विषय है कि महाविद्यालय में संगीत वाद्य (सितार) विभाग में अनवरत उच्चकोटि के शिक्षाविदों व कलाकारों का संयुक्त रूप व मेधावी छात्राओं का भी सतत सानिध्य प्राप्त होता रहा है। जिनमें उल्लेखनीय है सुप्रसिद्ध उपशास्त्रीय गायिका विदुषी सविता देवी जी का जो वाद्य विभाग की 1962–63 में स्नातक की छात्रा रहीं। सन् 1989 से 1993 तक उच्चकोटि की कलाकार व शिक्षाविद, पूर्व संकाय प्रमुख संगीत एवं मंच कला संकाय की विदुषी प्रो0 कृष्णा चक्रवर्ती जैसी गुणियों से संगीत वाद्य विभाग सम्पृक्त रहा है।

संगीत वाद्य विभाग सदैव अपनी सुदीर्घ समृद्ध विरासत को संजोने के क्रम में अनेकों विशिष्ट प्रस्तुतियाँ देता रहा है, चाहे वह नृत्य–नाटिका के रूप में हो, वृंदवादन की हो, सप्रयोग व्याख्यानों की हो, एकल मंचीय प्रस्तुतियों की हो, राष्ट्रीय संगोष्ठियों के विचार विमर्श की हो ऐसी श्रृंखलाएँ सतत आयोजित होती रही हैं।

वेबिनार के सन्दर्भ में

'नादाधीनम् जगत्सर्वम्' भारतीय संस्कृति में नाद को ब्रह्म स्वरूप माना गया है, जो हमारी संगीतत्रयी का भी मूल तत्व या उपकरण है जो अमूर्त होते हुये भी अत्यन्त प्रभावी व सर्वव्यापी है। संगीत कला अनादि है, अनन्त है। इसका आज 21वीं शताब्दी तक कोई प्रामाणिक ग्रंथ नहीं है जो पूर्णतः सिद्ध कर सके कि संगीत की उत्पत्ति की अजस्र धारा कहाँ से व कब से प्रहवमान है? इस सृष्टि के प्रादुर्भाव काल से ही मानव आनन्द की प्राप्ति हेतु प्रयासरत रहा है और उसने नाना प्रकार की निज कल्पनाओं को सृजनात्मकता के पंख लगाये और नित्य नवीन कलाओं के निष्पादन में संलग्न रहा जिसके फलस्वरूप 'कलाओं' का जन्म हुआ।

इस सृष्टि के प्रत्येक भू–भाग की संगीत कला अपने में नवीनता व मौलिकता का अद्भुत साम्य लिये हुये है, लेकिन जब हम बात करते हैं 'भारतीय संगीत' की जो अति सुदृढ़, समृद्ध, वैभवशाली, बहुआयामी, देवत्व से जुड़ी प्रकृति एवं विशिष्ट आध्यात्मिक, वैदिक परम्पराओं व चिकित्सा विज्ञान से सम्पृक्त अति लोकप्रिय विरासत के रूप में आज सम्पूर्ण वैश्विक क्षितिज में अपनी अनुगूँज से उद्भासित है हमारी गौरवमयी भारतीय सांगीतिक विरासत।

हमारे युगद्रष्टाओं व विद्वान मनीषियों ने माना है कि भारतीय संगीत का 'उत्स– 'ओम' है। ये वेद का बीज मंत्र भी है। इस विषय में मनु कहते हैं कि – ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद से अ, उ, म – ये तीन अक्षर लेकर 'प्रणव' ओम बना है। कहीं इसे 'अ' ब्रह्मा, 'उ' विष्णु, 'म' महेश्वर का प्रतिरूप माना गया है। संगीत अति विशिष्ट कला है। इसके वैशिष्ट्य को परिभाषित करते विद्वान लेखक हैरी अर्नेस्ट हंट ने अपनी पुस्तक 'द स्पिरिट ऑफ म्यूज़िक' में लिखा है – संगीत केवल सामान्य ध्वनि नहीं है, अपितु यह सूक्ष्म अन्तर्वृत्तियों के उद्घाटन का सबल साधन है।''

इसी क्रम में मार्टिन लूथर का कहना है कि – **"Beautiful music is the art of the prophets that can calm the agitations of the soul, it is one of the most magnificent and delightful presents GOD has given us."**

आज विसंगतियों के दौर में सम्पूर्ण विश्व कोविड–19 के संक्रमण से स्तब्ध व संत्रस्त है। हम सभी की नियमित दिनचर्या पर अति सूक्ष्म वायरस के संक्रमण के कारण जीवन ठहर सा गया है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भारतीय संगीत एक ऐसा सबल साधन है जो सभी के अशान्त–क्लान्त मन को अपनी सुमधुर स्वर लहरियों की फुहार से उर्जस्वित व आनंदित करने में सक्षम है।

हमारे भारतीय संगीत की पूर्णता गायन, वादन व नृत्य की त्रिवेणी में है। इन तीनों मुख्य धाराओं की अनेकों उपधाराएँ हैं जिसको प्रत्येक व्यक्ति अपनी रुचि के अनुरूप दृश्य या श्रव्य के रूप में आनन्द ले सकता है। हमें आज की विसंगति के दौर की चुनौतियों का समाधान डिजिटल दुनियाँ में जुड़कर ही करना होगा व हम सब इस दिशा में प्रयासरत भी हैं। हम सबका यह मानना है कि चुनौतियाँ हैं तो समाधान भी उपलब्ध है, आवश्यकता है उसे अन्तर्दृष्टि व आत्मप्रज्ञा से समझने की व क्रियान्वित करने की। फिर वो समस्या, भारतीय संगीत के संरक्षण व परिवर्धन की हो, या आजीविका की, संगीत चिकित्सा व तनाव प्रबन्धन की हो, या महाविद्यालय या विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक गतिविधियों के सन्दर्भों में हो। आज इन्हीं सब बिन्दुओं के विचार–विनिमय मंथन हेतु हमें अपने बीच अति विशिष्ट अतिथिवृंद को एक साथ डिजिटल मंच से जुड़ने का एक अल्प प्रयास, किन्तु अमूल्य अवसर प्राप्त हुआ है, जिसे संगीत वाद्य (सितार) विभाग द्वि–दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार के रूप में आयोजित कर आप सबकी ज्ञान–गंगा में अवगाहन हेतु स्वागतोत्सुक है।

विविध आयाम बिन्दुः

1. संगीतिक त्रिवेणी की आजीविका पर कोरोना का प्रभाव
2. तनाव प्रबन्धन में वाद्यों की पृष्ठभूमि
3. प्रारम्भिक स्तर से उच्च शिक्षण में संगीत की अनिवार्यता : आज की माँग
4. कोविड–19 के परिवेश में तंत्री वाद्यों की शिक्षण पद्धतियों का मूल्यांकन
5. संगीत की संजीवक शक्ति
6. **Lockdown** के दौरान **online** सांगीतिक शिक्षण–प्रशिक्षण तकनीकी के दूरगामी परिणाम
7. नृत्य की **online** प्रस्तुति व शिक्षण : सम–सामयिक अध्ययन

About the College

Established in 1954, Vasant Kanya Mahavidyalaya was founded by the renowned philosopher and theosophist, Dr. Rohit Mehta, on the educational principles and ideals of the great visionary, Dr. Annie Besant. It is situated within the beautiful premises of the Indian Chapter of the Theosophical Society, Kamachha, Varanasi. Adopting the motto “Education as Service”, the college seeks to blend the principles of tradition and modernity and has been able to carve a niche for itself among the topmost institutions of the country dedicated to women education. It aims to develop the characters and personalities of its students and instil in them discipline as well as a sense of moral and cultural values. Affiliated to Banaras Hindu University, the college has achieved academic excellence by its postgraduate and undergraduate students continuously scoring good marks and being awarded the University gold medal and other prizes in different subjects. It has made a mark for itself through the various co-curricular, extra-curricular and cultural activities organized throughout the year. At present, the college runs 9 undergraduate courses in the Arts stream and 5 in Social Sciences as well as postgraduate classes and research in 5 subjects. Postgraduate classes in the remaining subjects alongwith a new subject in Geography is to be introduced. The college also successfully runs diploma classes in subjects recognized and sanctioned by UGC and BHU.

Kashi, the most ancient city of India, is situated on the banks of the holy Ganga, a temple or place of worship in itself. Kashi is famous in the world for its rich Vedic traditions, cultural heritage and for being the place where renowned musicians practised and attained near perfection in their art. Our inspiration, Dr. Annie Besant, believed that the study of Hindi, Sanskrit, English and Music should be an integral part of women education. It is a matter of immense pride for us that the Department of Instrumental Music (Sitar) has produced many meritorious students and great musicians and academicians have been associated with it. Famous semi-classical singer, Smt. Savita Devi ji was a student of the Department from 1962-63. From 1989 to 1993, the Department of Instrumental Music was blessed with the presence of many renowned artists and scholars, notable among them being Prof. Krishna Chakravarty, former Dean, Faculty of Performing Arts, BHU.

Carrying forward its vast rich heritage, the Department of Instrumental Music has given many notable performances and presentations in dance-dramas, orchestra, Lecture-demonstration, solo performances and national seminars.

About the Webinar

Nādādhinam jagatsarvam - In Indian culture, nada is considered equivalent to Brahma and is also held to be the basic or fundamental element of our music trinity viz., Vocal Music, Instrumental Music and Dance. Though it is abstract, it is very potent and omnipresent. The art of music is eternal and even in the 21st century, there is no authentic source which can truly trace its origin and shed light on the reasons behind its smooth flow down the ages, unhindered and uninterrupted. Since the genesis of this world, man has been searching for various means of attaining pleasure and bliss, giving vent to his imagination and thereby creating new forms of art.

Different kinds of music from all over the world have the unique combination of newness and originality but when we talk of Indian music, we find it to be well established, rich, glorious, multi-dimensional, divine, mystic, sublime, deeply related to medicine and therapy on the one hand and immersed in our ancient Vedic traditions on the other. Today, undeniably, our rich musical heritage is a beacon, illuminating the entire world.

Our seers and scholars have held that Indian music germinated from AUM, the bīja mantra of the Rigveda. As Manu says, the word AUM is formed of three letters a, u and m which are taken from the Rigveda, Samaveda and Yajurveda respectively. In some places, 'a' is considered to be symbolic of Brahma, 'u' of Vishnu and 'm' of Maheshwar. Music is a very specific art. Defining its distinctiveness, renowned scholar Harry Earnest Hunt in his book "The Spirit of Music" says that music is not any ordinary sound but is a very powerful medium for expressing the subtle inner consciousness.

Similarly, Martin Luther also opines that "Beautiful music is the art of the prophets that can calm the agitations of the soul, it is one of the most magnificent and delightful presents GOD has given us."

Indian music is an amalgamation of Vocal Music, Instrumental Music and Dance. There are sub-types of these three main categories and each individual can derive pleasure by following any art-form - audio or visual - according to his/her own inclination. In today's troubled times, solutions to various challenges can be found through the digital platform and many of us are trying to do so and come to terms with the changing times. It cannot be denied that if there are problems, then solutions are also present and the need is that we have the intuition and vision to search for them and execute them. These problems can be related to the conservation and amplification of music, music therapy, stress management, livelihood, and also the academic activities of colleges and universities. It is to address these problems that the Department of Instrumental Music (Sitar) has organized a two-day International Webinar and endeavoured to bring on a digital platform eminent scholars and artists to discuss and ponder over the various dimensions of popular Indian music in the present global scenario.

Sub-themes:

1. Effect of COVID-19 on the livelihood of musicians and artists.
2. Role of musical instruments in stress management.
3. Necessity and importance of music education from the primary to the higher levels.
4. Evaluation of Teaching methods of stringed instruments in the COVID-19 pandemic.
5. The rejuvenating power of music.
6. Long-term consequences of online teaching-learning techniques during lockdown.
7. Online presentation and teaching of dance: An appraisal.

HONORABLE SPEAKERS

26 June, 2020

Prof. Pt. Cittaranjan Jyotishi
'Chittarang'
Ex-Vice-Chancellor
Raja Mansingh Tomar Music & Arts
University, Gwalior

Ms. Reshma Srivastava
Sitar Artist
California

Prof. Revati Sakalkar
Faculty of Performing Arts
Banaras Hindu University

Prof. Pt. Sahitya Kumar Nahar
Professor (Music) & Ex-head
Department of Music & Performing Arts
University of Allahabad

27 June, 2020

Prof. Ritwik Sanyal
Ex-Dean
Faculty of Performing Arts
Banaras Hindu University

Prof. Rajesh Shah
Dean
Faculty of Performing Arts
Banaras Hindu University

Dr. C. Tulsi Das
Clinical & Rehabilitation Psychologist

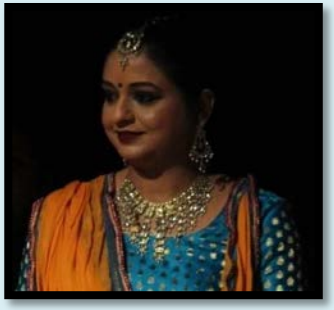

Ms. Anuradha Chaturvedi
Kathak Dancer
United Kingdom